दौसा जिला (राज.) के कृषि के परिवर्तित क्षेत्र की संभावनाए,नियोजन एवं सुझाव

डॉ.ललतेश जांगिड
सहायक आचार्य (भूगोल)
मत्स्य महाविधालय बानसूर (अलवर) राजस्थान

सर्वेक्षित दौसा जिला भारत के राज. राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है जिसका कुल क्षेत्रफल 3432 वर्ग किलोमीटर है ।

जिले के प्रचयनित गाँवों के उच्च परिवर्तन वाले गाँव ही कृषि उत्पादन के संतृप्त क्षेत्र है संतृप्त क्षेत्र की भूमि अत्यधिक उपजाऊ है । भूमि के उपजाऊ होने का लाभ किसानो को प्राप्त हो रहा है ।

इस क्षेत्र के किसान आधुनिक कृषि विधियों एवं आधुनिक तकनीको की ओर अग्रसित है, एवं कृषि विकास के लिए उन्नतशील बीज, उचित बीज दर, बीजो उपचार, रासायनिक एवं कम्पोस्ट खाद, कीटनाशक, उत्तम सिचाई के साधन, भू परिक्षण एवं मृदा परिक्षण तथा आधुनिक यंत्रो का प्रयोग कर रहे है । जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्र से उत्तम उत्पादन हो रहा है ।

सर्वेक्षित जिले की भूमि के शुद्ध बोए गए क्षेत्र में से कृषि के परिवर्तित स्वरुप के आधार पर दौसा जिले के प्रतिचयनित गावों में से मध्य व न्यून परिवर्तन वाले गाँव कृषि उत्पादन के परिवर्तनशील क्षेत्र है । इन परिवर्तनशील क्षेत्रों में किसानो का आर्थिक स्तर सामान्य है क्योंकि ये आधुनिक एवं परम्परागत दोनों विधियों द्वारा कृषि कर रहे है जिसके कारण सीमित मात्रा में कृषि उत्पादन हो रहा है ।

कृषि उत्पादन के परिवर्तनशील क्षेत्रों में कृषि उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि करने के लिए क्षेत्रीय किसानो को पूर्णतः आधुनिक तकनीको का प्रयोग करना चाहिए तथा सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजनाओ एवं वित्तीय सहायता व अनुदान का लाभ उठाना चाहिए ।

अध्ययन क्षेत्र के भौगोलिक क्षेत्रफल में से अकृषित भूमि एवं परती भूमि को कृषि संभावित क्षेत्र में रखा गया है । इन क्षेत्रों की भूमि को कम्पोस्ट एवं देशी खाद तथा उत्तम सिचाई आदि की सुविधा प्रदान कर उचित वैज्ञानिक विधियों द्वारा कृषि योग्य बनाया जा सकता है । जिसके परिणामस्वरूप इस भूमि पर उच्च उत्पादन संभव हो सकेगा ।

कृषि दौसा जिले की अर्थव्यवस्था की रीढ की हड्डी का निर्माण करती है । विगत वर्षो की अपेक्षा वर्तमान समय के किसानो ने कृषि कार्यों में अत्यधिक परिवर्तन कर कृषि स्वरुप को परिवर्तित किया है । विकास के साथ ही साथ सर्वेक्षित क्षेत्रीय किसानो को कृषि कार्य में कुछ समस्याओ का सामना करना पड रहा है । जैसे जोतों का आकार छोटा होना, निर्धनता, जलस्तर में गिरावट, विधुत की कमी भू संरक्षण एवं भू जल – स्तर में गिरावट आदि इन समस्याओ को दूर करने में और उत्पादन शक्ति की क्षीणता

को कम करने के लिए अनेक सुझाव एवं योजनाओ को महत्त्व दिया जा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्र का आर्थिक स्तर उच्च हो सके ।

मुख्य शब्द :– दौसा जिला , राज0,नियोजन, संभावनाए, कृषि उत्पादन, कृषि संतृप्त क्षेत्र,परिवर्तनशील क्षेत्र ,कृषि संभावित क्षेत्र, भूमि उत्पादन में वृद्धि, कृषि समस्या, कृषि सुझाव, कम्पोस्ट कृषि विकास, जोत, कृषि विकास योजना, फसल रोग एवं कीट, कृषि परिवर्तित क्षेत्र ।

प्रस्तावना :– सर्वेक्षित अध्ययन क्षेत्र 3432 वर्ग कि0 मी0 है /फैला हुआ है ।

भूमि उपयोग	2011	वर्तमान	परिवर्तन (%)
भौगोलिक क्षेत्र	3432 (वर्ग कि.मी.)	3432 (वर्ग कि. मी.)	
वन	76572 (हेक्टेयर)	64302 (हेक्टेयर)	–16%
शुद्ध बोया गया क्षेत्र	170316 (हेक्टेयर)	190292 (हेक्टेयर)	+11.7%
अकृषित भूमि	49108 (हेक्टेयर)	35588 (हेक्टेयर)	–27%
कृषि के लिए	18572 (हेक्टेयर)	19681 (हेक्टेयर)	+5.97%
अनुपलब्ध भूमि	4.63 (हेक्टेयर)	5.00 (हेक्टेयर)	
परती भूमि	2271 (हेक्टेयर)	2388 (हेक्टेयर)	+5.15%

तालिका संख्या (1)

तालिका संख्या (1) के अनुसार वर्तमान समय में 190292 हेक्टेयर शुद्ध बोया क्षेत्र में से कृषि से परिवर्तित स्वरुप के आधार पर दौसा जिले के प्रतिचयनित गाँवों के उच्च परिवर्तन वाले गाँव ही कृषि उत्पादन के संतृप्त क्षेत्र है।

कृषि उत्पादन के संतृप्त क्षेत्रों के कृषक आधुनिक कृषि विधियों एवं आधुनिक तकनीको की और अग्रसित है । वे कृषि विकास के लिए उन्नतशील, बीजों, उचित बीज दर, बीजोपचार, रासायनिक व कम्पोस्ट खाद, कीटनाशको, सिचाई के साधन, भू परिक्षण, मृदा परिक्षण तथा आधुनिक यंत्रों का प्रयोग कर एवं कृषि के लगभग सभी कार्य, जैसे ट्रेक्टर द्वारा भूमि की जुताई सीड्रील एवं प्लीटर द्वारा बुआई करना, रोपर व कम्बाईट, हारवेस्टर, आदि कृषि उपकरणों का उपयोग कर रहे है । इनके उपयोग से कृषि कार्यो को समय पर किया जा रहा है जिसके कारण अध्ययन क्षेत्र से उत्तम उत्पादन प्राप्त हो रहा है ।

इन संतृप्त क्षेत्रों के किसान संबधित समस्याओं का समाधान सरकारी योजनाओ द्वारा कर रहे है और कृषि वित्त सहयोग एवं कृषि विकास हेतु विभिन्न संस्थाओ (राष्ट्रीय बीज निगम, राज्य बीज निगम, कृषि मंडी, खाद्य निगम, सरकारी विकास बैंक, कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक, ग्रामीण विद्युतीकरण निगम आदि) का लाभ उठाकर कृषि के प्रतिरूप को परिवर्तित कर रहे है ।

कृषि उत्पादन के संतृप्त क्षेत्र की भूमि अत्यधिक उपजाऊ है । भूमि के उपजाऊ होने के लाभ किसानो को प्राप्त हो रहा है । इस क्षेत्र के किसान बाजार में आने वाले उन प्रत्येक उपकरणों एवं तकनीको को, तुरंत प्रयोग में लाते है । जिससे कृषि को परिवर्तित बनाया जा सके । संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि क्षेत्र के किसान जागरूक है एवं नित नए प्रयोगों एवं आधुनिकता में विश्वास करते है इन्ही सभी कारणों से यह कृषि उत्पादन का संतृप्त क्षेत्र कहा जा सकता है ।

कृषि उत्पादन के परिवर्तन शील क्षेत्र :–

सर्वेक्षित जिले की भूमि के शुद्ध बोये गए क्षेत्र में कृषि के परिवर्तित स्वरुप के आचार पर दौसा जिले के प्रतिचयनित गावों में से मध्यम एवं न्यून परिवर्तन वाले गाँव कृषि उत्पादन के क्षेत्र हैं। इन क्षेत्र के किसानो का आर्थिक स्तर सामान्य है क्योंकि वे आधुनिक एवं परम्परागत दोनों विधियों द्वारा कृषि कर रहे है जिसके कारण सीमित मात्रा में कृषि उत्पादन हो रहा है।

कृषि उत्पादन के परिवर्तनशील क्षेत्र के कुछ किसानो का आर्थिक स्तर उच्च है तथा क्षेत्र के कुछ किसानो का स्तर सामान्य है इस कारण उच्च श्रेणी के किसान आधुनिक तकनीको को प्रयोग में लाकर उत्तम उत्पादन कर रहे है । परन्तु सामान्य श्रेणी के किसान आधुनिक यंत्रों को प्रयोग में लाने के लिए आर्थिक रूप से सक्षम नहीं है । इसलिए कृषि उत्पादन से उन्हें सामान्य लाभ ही प्राप्त हो रहा है। इन क्षेत्रों में प्रति इकाई उत्पादन कम है इसका प्रमुख कारण यह है की कृषि प्रयोग में लायी गयी तकनीक , खेतों का आकार, बिखरे हुए जोत , और स्वामित्व में असमानता है। प्रायः निम्न श्रेणी के किसान आज भी परम्परागत व रूढ़िवादी हैं। ये अशिक्षित, अन्धविश्वास और पुराने रीति रिवाजो में फसें रहने के कारण जोखिम उठाने का साहस नहीं कर पा रहे है। उनकी आर्थिक दशा ,नवीन तकनीको को उपयोग करने में बाधक है और वे उत्तम बीज, उत्तम खाद, आधुनिक उपकरण, उत्तम सिचाई के साधन आदि सुविधाओ का लाभ प्राप्त करने में सक्षम है।

सर्वेक्षण द्वारा यह ज्ञात हुआ है की यह कृषि उत्पादन का परिवर्तनशील क्षेत्र है। कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के लिए क्षेत्र के किसानो को पूर्णतः आधुनिक तकनीको का प्रयोग करना चाहिए तथा सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजनाओ एवं वित्तीय सहायता व अनुदान का लाभ उठाना चाहिए। इसके अलावा कृषि कार्यों के लिए प्रमाणित बीजो, रासायनिक एवं जैविक खादों उत्तम सिचाई यंत्रो एवम भूमि परीक्षण को भी प्रयोग में लाना होगा। इन क्षेत्रों में पद्धतियों का प्रयोग करके कृषि उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है जिससे कृषि के क्षेत्र परिवर्तित होकर कृषि उत्पादन के संतृप्त क्षेत्र हो सके।

❖ कृषि संभावित क्षेत्र :–

सर्वेक्षित अध्ययन क्षेत्र के भौगोलिक क्षेत्रफल 3432 वर्ग कि.मी.में से अकृषित (35588 हेक्टेयर) भूमि व परती भूमि (2388 हेक्टेयर) को कृषि संभावित क्षेत्र में रखा गया है। जिले के लिए अकृषित एवं परती भूमि को अत्यधिक महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है क्योंकि वर्तमान समय में तीव्र गति से बढती हुई जनसख्या के लिए खाद्य के उत्पादन में वृद्धि लाना समय की मांग बन गया है एवं बढती हुई जनसंख्या के लिए खाधान्न की पूर्ति एक बड़ी समस्या है। इन समस्याओ को दूर करने के लिए इन भूमियों को सुचारू रूप से खाद्य (कम्पोस्ट व देशी) एवं जल आदि की सुविधा प्रदान कर उचित फसल परिवर्तन अपनाकर अन्य वैज्ञानिक विधियों द्वारा कृषि योग्य बनाया जा सकता है। जिसके परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी ओर प्रति हेक्टेयर बढ़ते उत्पादन के कारण किसानो को राजस्व प्राप्त होगा।

कृषि में विकास एवं परिवर्तन एक लगातार होने वाली प्रक्रिया है यह परिवर्तन कई स्तरों पर होता है । कृषि पर पूर्ण निर्भरता, योजनाबद्ध कृषि, उच्च गुणवत्ता वाले बीजो का प्रयोग तथा भू परीक्षण आधारित उर्वरको का प्रयोग लाभप्रद होता है। जिससे भूमि पर उच्च उत्पादकता वाली कृषि होना संभव है।

❖ **कृषि की समस्याए एवं नियोजन :–**

कृषि दौसा जिले की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी का निर्माण करती है एवं जिले के निवासियों के आर्थिक, सामाजिक, जीवन, को भी प्रभावित करती है तथा कृषि को भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक कारक भी प्रभावित करते हैं ।

विगत वर्षो की अपेक्षा वर्तमान समय में दौसा जिले के किसानो ने कृषि कार्यों में अत्यधिक परिवर्तन कर कृषि स्वरुप को परिवर्तित किया है । किसानो ने प्रमाणित बीजो, उर्वरको तथा सिचाई सुविधाओ की उपलब्धता से कृषि क्षेत्र कार्य में तीव्र विकास किये एवं कृषि उत्पादन तथा उत्पादकता में आशातीत वृद्धि की है । विकास के साथ ही साथ सर्वेक्षित क्षेत्रीय किसानो को कृषि कार्य में कुछ समस्याओ का भी सामना करना पड रहा है । दौसा जिले में कृषि के विकास को बाधित करने वाली समस्याए निम्नलिखित है :–

(1) दौसा जिले के कुछ क्षेत्रों में कृषि जोतों का आकार छोटा है कि वे आर्थिक लाभ प्रदान नहीं कर पा रहे है जिनके कारण नवीन ढंग से कृषि संभव नहीं है साथ ही उत्पादन व्यय अधिक लगता है और उत्पादन कम होता है ।

(2) ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता गहराई तक व्याप्त है छोटे कृषक बड़े साहूकारों से भारी ब्याज पर ऋण लेते है और उन्हें लौटाने में असमर्थ रहते है । परिणामतः उन्हें अपनी फसल तथा भूमि से हाथ धोना पड़ता है इसलिए किसान ऋणग्रस्त होते चले जा रहे है ।

(3) क्षेत्र के अधिकांश किसान फसलो की कटाई के बाद आग लगा देते है। परिणामस्वरूप खेतों की उर्वरा शक्ति कम होती चली जा रही है । भूमि का जीवाश्म जल कर मिट्टी को कठोर कणों में बदल देता है जिसका प्रभाव फसलो के लागत व उत्पादन पर पड रहा है ।

(4) रासायनिक खादों के अत्यधिक प्रयोग से जिले की भूमि की उत्पादकता कम हो रही है । रासायनिक खादों से फसलों को नुकसान पहुँचता है । तथा भूमि में भी अम्लीयता एवं क्षारीयता बढती है जो कृषि उत्पादन को प्रभावित कर रही है ।

(5) जिले की बाणगंगा – नदियों का जल अधिक तापमान के कारण सूखता जा रहा है नदियों के जल सूखने के कारण जो किसान सिचाई के लिए नदियों पर आश्रित है उन्हें अत्यधिक समस्याओ का सामना करना पड़ रहा है।

(6) कृषि कार्य को उत्तम बनाने के लिए विद्युत उर्जा महत्वपूर्ण संसाधन है । विद्युत की कमी के कारण किसानो को कृषि कार्य के लिए अनेक समस्याओ का सामना करना पड़ रहा है ।

(7) जिले के किसानो की यह प्रमुख समस्या है की फसल में कीट एवं रोगों का लगना, जिस कारण से फसले नष्ट हो जाती हैं । जिले की प्रमुख फसलो में लगने वाले रोग व कीट निम्न तालिका में प्रदर्शित/अंकित है :–

जिले की प्रमुख फसलो में लगने वाले रोग व कीटः–

क्रम सं.	फसल	रोग व नाशी कीट
1	गेहूं	सौंध /आर्मी वर्म, रतुआ
2.	चना	इल्ली, उगरा रोग
3.	मटर	चूर्णी, फफूंद
4.	ज्वार	टिड्डियाँ, आर्मी वर्म, धान गला ताने में

(8) सर्वेक्षित जिले में भू क्षरण एक महत्वपूर्ण समस्या है ।

(9) कृषित क्षेत्रो में परिवहन, संचार, बैंकिंग, विधुत, भंडारणता, विपणन आदि सुविधाओ की कमी है जिससे जिले का कृषि विकास बाधित हो रहा है ।

(10) भूमिगत जल स्तर सर्वेक्षित क्षेत्र में तेजी से घट रहा है । सर्वेक्षण द्वारा यह ज्ञात हुआ है की लगभग 15 से 20 फुट से भी अधिक भू जल स्तर गिर गया है तीव्रता से गिरता स्तर वास्तव में चिंता का विषय है ।

❖ **नियोजन :–**

नियोजन निर्दिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने का संगठित, सचेत तथा सतत प्रयास है जिससे वास्तविकता तथा अपेक्षाओ का अंतर कम किया जा सके । यह आत्मनिर्भरता प्राप्त करने जिले की विषमताओ को कम करने के लिए तथा विकास के लिए आदर्श दशाए तैयार करने का प्रयास करता है ।

और दीर्घ अवधि के लिए आर्थिक सामाजिक विकास से सम्बन्ध रखता है । क्षेत्रीय जनसंख्या की निर्धनता दूर करने के लिए, प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करने, आय तथा सम्पत्ति की असमानताओ को कम करने के लिए नियोजन अपरिहाय है । नियोजन की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि जिले में प्राकृतिक संसाधनों के वितरण तथा उपयोगो में बहुत व्यापक विषमताए विधमान है । व्यक्तियों द्वारा साधनों का उपयोग करने तथा उनमे रूपांतरण करने की क्षमता भी समान नहीं है । दौसा जिले की कृषि का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है की कृषि में वर्तमान एवं भावी चुनौतियों का सामना कितने नियोजित एवं प्रभावशाली विधियों से किया जा रहा है ।

अध्ययन क्षेत्र के परिवर्तित कृषि प्रतिरूप एवं कृषि विकास के लिए किसानो को ऐसी योजनाओ का प्रयोग करना होगा जिसके द्वारा कृषि कार्य कर उत्तम उत्पादन हो, जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक सामाजिक स्तर उच्च हो और खाद्य सुरक्षा भी प्राप्त हो । जिले के किसानो को यह ध्यान रखना चाहिए की वह जिस क्षेत्र पर कृषि कार्य कर रहे है वहां की स्थलाकृति कैसी है मिटटी उपजाऊ है की नहीं, यदि नहीं तो किस विधि द्वारा उसे कृषि के लिए उपजाऊ बनाया जा सकता है तथा सिचाई के लिए कैसे साधन उपलब्ध है और उन्हें ऐसी फसलो को महत्त्व देना चाहिए जिसकी मांग अधिक हो ।

जिले की जनसंख्या उत्तरोत्तर वृद्धिशील है जिससे कृषि भूमि पर प्रतिदिन भार बढ़ता जा रहा है । इतना ही नहीं व्यावसायिक कृषि की प्रतिस्पर्धा में किसान एक ही भूमि में अनेक फसलो के उत्पादन द्वारा विविध उपयोग में ला रहे है जिससे कृषि भूमि (मृदा) की उत्पादन शक्ति क्षीण हो रही है । फलस्वरूप यह परम आवश्यक है की कृषि भूमि को इस प्रकार उपयोग में लाया जाए जिससे भविष्य में क्षेत्रीय भूमि सुरक्षित एवं लाभदायक बनी रहे । भूमि उपयोग एवं फसल स्वरुप के पक्षों में संतुलन स्थापित करना कृषि नियोजन का प्रमुख उद्देश्य है । कृषि के लिए ऐसी योजनाओ को महत्त्व देना जिसके द्वारा क्षेत्र का आर्थिक स्तर उच्च हो सके ।

कृषि विकास के लिए सरकारी एवं सामाजिक व्यवस्था भी आवश्यक है । वर्तमान समय में सरकार द्वारा सर्वेक्षित जिले में कृषि संतुलन विकास के लिए कृषक कल्याण तथा कृषि विकास विभाग समिति का गठन किया गया है की क्षेत्र को विकास के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करने वाली समस्याओ से मुक्ति प्राप्त हो

। इन समितियों के द्वारा दौसा जिले के सम्पूर्ण किसानो को केंद्रीय वित्तीय सहायता प्रदान कराई जा रही है एवं इन समितियों द्वारा क्षेत्र में संचालित कृषि विकास योजनाए निम्नवत प्रस्तुत है :–

(1) बीज ग्राम योजना
(2) राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन दलहन योजना
(3) राष्ट्रीय कृषि विकास योजना
(4) अन्नपूर्णा योजना
(5) जल स्तर योजना
(6) राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना
(7) कम्पोस्ट खाद्य योजना

कृषि विकास सम्बन्धी प्रत्येक योजनाओ का उद्देश्य वही है की जिले के कृषि कार्यों में परिवर्तन आये और किसान प्रत्येक सरकारी योजना का लाभ प्राप्त करके कृषि उत्पादन में वृद्धि कर सके । जिससे किसानो के साथ साथ जिले का भी आर्थिक स्तर उच्च हो सके ।

❖ **सुझाव :–**

सर्वेक्षित जिले के किसानो को कृषि की नवीन विधियों के लाभ से अवगत कराया जाये, उनका प्रयोग करना सिखाया जाये जिससे की वह अपना कृषि उत्पादन बढ़ा कर कृषि को व्यापारिक रूप प्रदान कर सके और यह प्रयास किया जाये की वह प्राकृतिक संकट का सामना करने के लिए वैज्ञानिक विधियों को प्रयोग में ले ।

विगत वर्षो की अपेक्षा वर्तमान जनसख्या वृद्धि दर बढती जा रही है । जनसंख्या वृद्धि के कारण वर्तमान में खाद्य पदार्थो में कमी आई है । इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है की कृषि उपज में अत्यधिक वृद्धि की आवश्यकता है । उपज में वृद्धि दो प्रकार से हो सकती है :–

(1) कृषि अधीन रकबे में वृद्धि
(2) प्रति इकाई उपज में वृद्धि

सर्वेक्षित जिले के कृषि अधीन रकबे में वृद्धि संभव नहीं है । वर्तमान में क्षेत्रीय कृषको को ऐसे यंत्रों की आवश्यकता है । जिसके द्वारा क्षेत्र में प्रति इकाई उपज में वृद्धि हो गहन कृषि की आवश्यकता के कारण क्षेत्रीय किसानो ने कृषि उपज में वृद्धि की है । इस वृद्धि के कारण किसानो को अनेक समस्याओ का सामना करना पड रहा है वर्तमान समय में किसानो को ऐसे मार्गदर्शन की आवश्यकता है की उपज में वृद्धि तो हो परन्तु प्रदर्शित की गयी समस्याओ का सामना न करना पड़े ।

समस्याओ का समाधान करने के लिए और भी कदम उठाये जाने की आवश्यकता है क्षेत्रीय कृषि की समस्याओ के समाधान करने के लिए सुझाव निम्न प्रकार हैं :–

(1) जोतो के विखंडन से उत्पन्न समस्या को हल या दूर करने के लिए चकबन्दी तथा सरकारी कृषि व्यवस्था उपयोगी है । अध्ययन क्षेत्र के किसानो को चकबन्दी योजना अपनाना चाहिए । इस योजना द्वारा जोत के विखंडन की समस्या को दूर कर अतिरिक्त भूमि को कृषि कार्य के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है ।
(2) जिले के छोटे किसान निर्धन वर्ग के है वे कृषि के विकास के लिए पूँजी की आवश्यकता की पूर्ति गाँवों के साहूकारों से करते है जो उन्हें भारी ब्याज दर पर ऋण देते है । चूँकि किसान ऋणग्रस्त न हो इसके लिए सहकारी संस्थाओ का लाभ उठाना चाहिए । सहकारी समितियों की सहायता से किसानो को बीज, खाद, कम ब्याज दर पर ऋण की सुविधाए उपलब्ध कराई जा रही है। इन बैंक द्वारा किसान क्रेडिट कार्ड दिए जा रहे है जिले के

किसान इन कार्डो का प्रयोग करके साहुकारो के छल से बच सकते हैं ।

(3) कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों का अत्यधिक उपयोग मिट्टी की गुणवत्ता को नष्ट कर रहा है । इसलिए क्षेत्रीय किसान कृषि प्रतिरूप को परिवर्तित करने के लिए रासायनिक उर्वरको का प्रयोग संतुलित मात्रा में करें और जैविक खादों को भी प्रयोग में ले । मिट्टी की उर्वरा शक्ति में वृद्धि होगी, मिटटी की प्राकृतिक शक्ति बनाये रखने पर ही फसल उत्पादन की अन्य तकनीके सफल हो सकती है । जैविक खादों को प्राथमिकता देने पर यह संभव हो सकता है ।

(4) कृषि उत्पादन में उन्नत बीजों की भूमिका महत्वपूर्ण है । वर्तमान में कृषि उत्पादन में वृद्धि एवं कृषि प्रतिरूप को परिवर्तित करने के लिए कृषि विभाग एवं अनुसंधान केन्द्रों द्वारा प्रमाणित बीज उपलब्ध कराए जा रहे है । इन विभागों द्वारा जिले में उन्नत बीज वितरण केंद्र स्थापित किये गए है । जिसका लाभ क्षेत्रीय कृषको को उठाना चाहिए ।

(5) सरकार द्वारा राष्ट्रीय मिट्टी संरक्षण कार्यक्रम जिले में भूमि को सुधारने के लिए चलाये जा रहे है । जिससे भूमि को संरक्षण प्रदान हो रहा है । राष्ट्रीय मिट्टी संरक्षण कार्यक्रम का लाभ उठाकर भूमि संरक्षण की समस्या को दूर कर कृषि से लाभ उठाया जा सकता है ।

(6) किसानो को अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए भारतीय खाद्य निगम (FCI) योजना का लाभ उठाना चाहिए ।

(7) देश के अन्नदाता किसानो को कृषि सम्बंधित सुझाव एवं मार्गदर्शन देने के लिए केंद्र द्वारा कॉल सेन्टर की स्थापना की गयी है दौसा जिले के किसानो को इन कॉल सेंटरों पर संपर्क करके कृषि विशेषज्ञों से कृषि सम्बन्धी कोई भी जानकारी प्राप्त कर लाभ उठा सकते है ।

(8) दौसा जिले के किसानो को भण्डारित अनाज की सुरक्षा पर ध्यान देना चाहिए । अतः भण्डारित अनाज को उचित रूप से बंद करके रखे ताकि नमी, ताप, कीट व चूहों का प्रवेश न हो सके तथा समय समय पर भंडारित अनाज निरीक्षण करते रहना चाहिए ।

(9) क्षेत्रीय किसानो को व्यावसायिक फसलो को अधिक महत्त्व देना चाहिए क्योंकि व्यावसायिक फसलो से किसानो का आर्थिक स्तर उच्च होगा ।

(10) जिले की परती भूमि को तकनीकी सहायता से कृषि योग्य बनाए और उस भूमि पर औषधीय वृक्षों की खेती करे क्योंकि औषधीय फसले साधारण लागत से सभी प्रकार की परती भूमि में सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है । परती भूमि पर औषधीय वृक्षों की कृषि ही सफलता की कुंजी है ।

(11) सर्वेक्षित अध्ययन क्षेत्र के सम्पूर्ण किसानो को कृषि परिवर्तन एवं कृषि विकास सम्बन्धी सरकारी योजनाओ का लाभ उठाना चाहिए । जिले में कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि करने के उद्देश्य से कृषि विभाग द्वारा क्रियान्वित कार्यक्रमों जैसे प्रमाणित बीजो का प्रदाय, कृषि यंत्र एवं रासायनिक उर्वरको का वितरण, पौध संरक्षण हेतु कीटनाशको दवाओ का प्रदाय, प्राकृतिक विषमताओ से होने वाली हानि की क्षतिपूर्ति हेतु किसानो के लिए फसल बीमा योजना आदि प्रमुख कार्यक्रम

क्रियान्वित किये जा रहे है। इन कार्यक्रमों को परिवर्तित कर उच्च उत्पादन द्वारा कृषि को विकास प्रदान कर सकते हैं ।

❖ **उद्देश्य** :–

इस शोध पत्र का उद्देश्य यह है की दौसा जिले के भौगोलिक क्षेत्रफल में से कितने प्रतिशत क्षेत्र कृषि एवं कृषि कार्यों में संलग्न है।

दौसा जिले की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है जिले के किसानो को कृषि में किन किन समस्याओ का सामना करना पड़ता है एवं कोन कोन सी योजनाओ को बनाकर इन समस्याओ का समाधान किया जा सके तथा कृषि में हो रहे परिवर्तन सम्बन्धी कृषि उत्पादन के संतृप्त क्षेत्र, परिवर्तन शील क्षेत्र एवं संभावित क्षेत्रों का अध्ययन करना और यह ज्ञात करना है कि किन क्षेत्रों की भूमि अत्यधिक उपजाऊ है और इनसे क्या लाभ तथा हानि है ।

❖ **निष्कर्ष** :–

दौसा जिले के क्षेत्रीय अध्ययन से यह स्पष्ट ज्ञात होता है की क्षेत्र की भूमि अत्यधिक उपजाऊ है जो की कृषि के लिए अत्यधिक लाभप्रद है । कृषि उत्पादन के संतृप्त क्षेत्र की भूमि अत्यधिक उपजाऊ है । जिले के किसान आधुनिक कृषि विधियों एवं आधुनिक तकनीको की ओर अग्रसित है । जिसके कारण अध्ययन क्षेत्र से उत्तम उत्पादन प्राप्त हो रहा है एवं कृषि उत्पादन के परिवर्तनशील क्षेत्रों के किसानो का आर्थिक स्तर सामान्य है क्योंकि ये लोग आधुनिक एवं परम्परागत दोनों विधियों द्वारा कृषि कर रहे है । इन परिवर्तनशील क्षेत्रो के किसान पूर्णतः आधुनिक तकनीको का प्रयोग कर तथा सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओ एवं वित्तीय सहायता का लाभ उठाकर प्रमाणित बीजो, रासायनिक एवं जैविक खादों, उत्तम सिचाई यंत्रो को प्रयोग में ले तो यह क्षेत्र परिवर्तित होकर कृषि उत्पादन के संतृप्त क्षेत्र में बदले जा सकते है ।

विगत वर्षो की अपेक्षा वर्तमान समय में दौसा जिले के किसानो ने कृषि कार्यों में अनेक परिवर्तन कर कृषि स्वरूप को परिवर्तित किया है । इस विकास के साथ ही साथ सर्वेक्षण क्षेत्रों के किसानो को कृषि कार्यों में कुछ समस्याओ का सामना करना पड रहा है । कृषि में हो रही इन समस्याओं को दूर करने के लिए क्षेत्रीय किसान नियोजन एवं सरकारी योजना का लाभ उठाकर कृषि उत्पादन में वृद्धि कर इस जिले का आर्थिक स्तर ऊँचा उठा रहे है ।

❖ **सन्दर्भ ग्रन्थ सूची** :–

1.कौशिक, एस.डी.–आर्थिक भूगोल के सिद्धांत रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ 2020.
2. गौतम अल्का – भारत का वृहद भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2019.
3. जैन टी.आर.–स्टेटिकल फॉर इकोनॉमिक्स, वी. के. पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2018.
4. बंसल हरदेव –राजपाल हिन्दी शब्द कोष , राजपाल एंड संस, दिल्ली 2018.
5. भानु डी.एस.– एग्रीकल्चर प्रोडक्टिविटी इन इण्डिया अनमोल पब्लिकेशन्स . नई दिल्ली 2018.
6. मार्गन डब्लू बी. एग्रीकल्चर जियोग्राफी – मैथ्यू लन्दन 1981.
7. मामोडिया, सी.वी.– एग्रीकल्चर प्रोब्लम्स ऑफ़ इण्डिया किताब महल, इलाहाबाद –1953.
8. सिंह यू.वी. – कृषि भूगोल, राजीव प्रकाशन मेरठ1998.
9.हुसैन माजीद – कृषि भूगोल, रावत पब्लिकेशन्स नई दिल्ली 2017.
10.अवस्थी नरेन्द्र मोहन, भौतिक भूगोल –लक्ष्मीनारायण अग्रवाल –2016.

❖ पत्र – पत्रिकाएँ :–

1.आई इण्डिया , ग्राफिसेस ,2010.

2.जिला सांख्यिकी पुस्तिका, दौसा 2019,2020.

3.जिले के प्रमुख आंकड़े– जिला योजना सांख्यिकी कार्यालय दौसा,राज. वर्ष 2018,2019.

4. भूगोल परिभाषा कोश, दिल्ली –2018.

❖ वेबसाइट :–

1. www.censusindia
2- www.irri.org.in
3- www.dausa
4- http://dausa.in/Geography
5- http://dausa.nic.in/projection
6- www.landrecom.mp.gov.in
7- www.maps/rajasthan/districts/dausa

❖ समाचार पत्र :–

1. दैनिक जागरण
2. दैनिक भास्कर
3. नई दुनिया
4. राजस्थान पत्रिका
5.नवभारत टाइम्स
6. जागृति साहस

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com